रात्रिक्लास 12.3.68 ओमशान्ति ''शिवबाबा याद है?''

बच्चों में दिमाग़ चाहिए। तुम यहां आये हो स्वर्ग के द्वार खोलने। बाबा ने स्लोगन बताया था। शंकराचार्यनुवाचः माताएँ नर्क का द्वार खोलती हैं, ज्ञान सागर शिव भगवानुवाचः माताएँ स्वर्ग का द्वार खोलती हैं। तुम लिखते भी हो गेट वे टू हेवन। समझाने का दिमाग़ अच्छा चाहिए। कइयों का दिमाग़ नहीं। श्रीमत पर हम क्या कर रहे हैं। श्रीमत देने वाला भी कौन है! वह तो एकदम जैसे पोले हैं। तुम्हारा तो गायन है शिव शक्ति सेना। तो बच्चों में उछल चाहिए। बच्चा कहता है आगरा में अच्छा सेन्टर मिलता है। बोला–अच्छा जाकर मकान लो, सेन्टर जाकर खोलो। बाप तो कहते हैं सभी को स्वर्ग का रास्ता बताओ। जालंधर में बहुत अच्छा किया था। यह तो कहते हैं हम ओपनिंग ही बहुत भभके से करेंगे। विश्व में शान्ति तो तुम ही स्थापन करते हो। बोलो, हमको बाप द्वारा यह प्राईज़ मिलती है। इसको कहा जाता है ....नशा। बच्चों को बड़ा उमंग चाहिए, रूहाब चाहिए तो समझें इन शक्तियों की तो कमाल है। गायन भी है। दिखाते हैं सूपनखा, पूतना आदि–2 बरोबर हैं ना। माईयों भी ऐसे हैं। तुम लिखते हो वह नर्क का द्वार खोलती हैं हम ....स्वर्ग का द्वार खोलती हैं। ल.ना. के मन्दिर, शिव के मन्दिर में, हॉलों में आजकल शादियाँ कराते रहते हैं। तुमको कहना चाहिए यह क्या? जो पावन देवताएँ, उनके मन्दिर में शादी! बड़ा नशा चाहिए। बाप कहते हैं यह मेरा पार्ट कल्प–2 का है। तुम भी कहते हो बाबा ह(म) कल्प–2 आपसे यह वर्सा लेते हैं। तो इतनी हिम्मत भी चाहिए ना। तुम ब(च्)चों में बड़ा नशा चाहिए। तुम शिव–शक्तियाँ हो ना। बाबा ने जालंधर का प्रोगा(म) अच्छा देखा। होना चाहिए पहले–2 देहली में। देहली कैपीटल है ना ; इसलिए बाबा कहते रहते हैं घेराव डालो। मेहनत करो। सर्विसएबुल बच्चा होगा तो बाबा इस सर्विस में लगा देंगे। बाप कहते हैं पुरानी दुनियाँ को भूल जाना है। बाप को ही याद न करेंगे तो नई दुनियाँ में कैसे जावेंगे? मोचरा खाकर मानी टूकड़ पाना कोई अच्छी बात है क्या? पास विद ऑनर होना चाहिए। बात–चीत करने की दिमाग़ बहुत अच्छा चाहिए। इस ज्ञान यज्ञ में विघ्न भी पड़ते हैं। सारी दुनियाँ ही इस यज्ञ में आहुति होती है। वह यज्ञ रचते हैं। एक तरफ भक्ति, दूसरे तरफ शास्त्र रखते हैं। तुम बच्चे जानते हो अभी सारी दुनियाँ ही स्वाहा होनी है। टाईम थोड़ा है। तुम सिद्ध कर सकते हो। शंकराचार्य वाली चौपड़ियाँ बाबा ने कहा था हाथ करो। छपा भी सकते हो। तुम सच्च–2 बतलाते हो। गीत भी है चलो वृदावन.....तुम तो जाते हो ल.ना. के राजधानी में। हम अपने लिए राजधानी स्थापन कर रहे हैं। ऐसे–2 स्लोगन का नारा लगाओ। बाबा तो ऐसे स्लोगन देखे तो बहुत खुश होते हैं। कोई कुछ कर न सके। आपे ही थक जावेंगे। यह आर्यसमाजी आदि तुम्हारे एडवरटाईज़ करते हैं। कल्प–2 यह होता है और तुम अपना राज्य–भाग्य लेते हो। माया तो नाक,कान से पकड़ती रहेगी। माया है बाज। एकदम हप कर देगी। दिमाग़ ही खड़ा करने न देती। मेहनत करो अच्छी तरह से। जागो जगाते रहो। मुरलियाँ कितनी अच्छी–2 चलाते रहते हैं। यह शंकराचार्य आदि भी तुम्हारे चरण में आवेंगे। राजा शरण आ गया फिर प्रजा क्या करेंगे? डरने की बात ही नहीं। कोई–2 समझते हैं ब्रह्मा का चित्र न डालें। अरे! ब्रह्मा के बिगर ब्राह्मण कैसे बनेंगे? ब्रह्मा का चित्र ही न डालें तो डरपोक ठहरे ना। ड्रामा के प्लैन अनुसार कैसे–2 अचानक मर जाते हैं। मिट्टी आदि उठाते रहते हैं। तुम जानते हो यह मनुष्य सभी बन्दर मिसल हैं। वैश्यालय है ना। वह शिवालय था। यह तो वैश्यालय है ना; इसलिए बाबा ने लिखा था अपने से पूछो वैश्यालय के हो या शिवालय के हो? बैठे हो वैश्यालय में कहते हो शिवालय में। लज्जा नहीं आती है। तुम बच्चों की है अन्दर में गुप्त खुशी। हार्ट फेल न होना चाहिए हम (इ)तनी मेहनत करते हैं निकलती क्या है? यह सब ढेर प्रजा बन रहे हैं। अभी तो कितनी दुःखी प्रजा है। गन्दी नालियों में झोपड़ियों में रहे पड़े हैं। नम्बरवार तो हैं ना। नम्बरवार तो होते ही हैं। तो नशा भर कर जाओ। तुमको ज्ञान अमृत की बोतल चढ़ाई जाती है। फिर बाहर नि(क)लने से नशाहीन न हो जाना चाहिए। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुडनाइट। मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते। ओमशान्ति।